सुरेन्द्र मोहंती

सुरेन्द्र मोहंती (21 जून 1922 [1] - 21 दिसम्बर 1990) ओडिशा में जन्मे एक भारतीय लेखक थे जिन्होंने ओडिया में लिखा । *उन्हें उनके उपन्यास नीलाशैला* के लिए केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था ।

कैरियर

वह 1981 से 1987 तक ओडिशा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष थे। वह समाचार पत्र *द संबाद* के पहले संपादक और बाद में मुख्य संपादक भी थे । वह लघु कथाओं, उपन्यासों, यात्रा वृत्तांतों, आलोचना और आत्मकथाओं के लेखक हैं। उन्होंने विभिन्न विधाओं से संबंधित लगभग 50 पुस्तकें लिखीं। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें *महानगर रात्रि* (महानगर की रात), *मरालारा मृत्यु* (हंस की मृत्यु), *अंधा दिगंत* (अंधकारमय क्षितिज), और *महानिर्वाण* (अंतिम प्रस्थान) हैं। *यदुबांसा ओ अन्यान्या गल्पा* (यदुबांसा और अन्य कहानियाँ), *राजधानी ओ अन्यान्या गल्पा* (राजधानी और अन्य कहानियाँ), *कृष्णचूड़ा* (गुलमोहर) और *रूटी ओ चंद्रा* (रोटी और चंद्रमा) उनकी प्रसिद्ध लघु कथाएँ हैं।

साहित्यकार होने के अलावा वे राजनीति में भी सक्रिय थे। वे गणतंत्र परिषद के सदस्य थे । वे 1957 में गणतंत्र परिषद के टिकट पर ढेंकनाल से सांसद चुने गए। बाद में वे उत्कल कांग्रेस में शामिल हो गए और 1971 में केंद्रपाड़ा निर्वाचन क्षेत्र से चुने गए।

पुरस्कार

- साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1957; *सबुजापत्र ओ धुसरा गोलाप* के लिए . [6]
- शरला पुरस्कार, 1980; *कुलब्रुधा* के लिए ।
- नीला सैला (ब्लू हिल) के लिए केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार।
- साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1987; *पाथा ओ पृथिबी* के लिए । [6]

चयनित कार्य

इतिहास, मिथक और किंवदंतियों पर आधारित सुरेन्द्र मोहंती के चार उपन्यास हैं - नीलाशैला (नीला पहाड़) 1968 में प्रकाशित, नीलाद्रि बिजया (नीलाद्रि की ओर विजयी वापसी) 1980 में प्रकाशित, कृष्णवेणीरे संध्या (कृष्णा नदी के तट पर शाम) 1985 में प्रकाशित और अजीबकारा अट्टहासा (अजीबका की व्यंग्यात्मक हंसी) 1987 में प्रकाशित।

नीलासाहिला

सबसे ज़्यादा पढ़ा और सराहा गया उपन्यास "नीलासैला" है, जो उड़ीसा के इतिहास के एक महत्वपूर्ण दौर में घटित हुआ है। उपन्यास की घटनाएँ वर्ष 1727 और 1736 के बीच घटती हैं, जब खुर्दा के राजा रामचंद्रदेव, जिन्हें उड़ीसा के लोग उड़िया जाति के देवता जगन्नाथ के प्रतिनिधि के रूप में पूजते हैं, इस्लाम धर्म अपना लेते हैं और कटक के मुस्लिम शासक की बेटी से शादी कर लेते हैं। लेकिन जब कटक के मुस्लिम शासक खुर्दा पर आक्रमण करते हैं और भगवान जगन्नाथ की मूर्ति को नष्ट करने की कोशिश करते हैं, तो रामचंद्रदेव उड़िया पहचान और भावना का

प्रतीक मूर्ति की रक्षा के लिए बहादुरी से लड़ते हैं। उपन्यास समकालीन उड़ीसा का सच्चा विवरण देता है, लेकिन यह इतिहास से कहीं बढ़कर है। यह उड़ीसा की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा का गहन चित्रण है जो आज भी उड़िया जातीय चेतना का अभिन्न अंग है।

नीलाद्रि बिजया

नीलासैला का अंत भगवान जगन्नाथ की मूर्ति को उसके मूल स्थान, पुरी मंदिर के रत्न सिंहासन से चिल्का झील के एक द्वीप पर ले जाने के साथ होता है, जबकि नीलाद्रि बिजया मूर्ति के अपने मूल निवास पर विजयी वापसी का वर्णन करता है। हालाँकि रामचंद्रदेव औपचारिक रूप से एक मुसलमान है, लेकिन वह देवता को मूल स्थान पर वापस लाने के लिए उत्सुक है और मुस्लिम ताकतों द्वारा हमला किए जाने के डर के बावजूद वह सफल होता है। उपन्यास एक दुखद नोट पर समाप्त होता है जब रामचंद्रदेव और उनकी पत्नी को गैर-हिंदू होने के कारण मंदिर में प्रवेश करने से रोक दिया जाता है।

कृष्णवेणी संध्या

उपन्यास "कृष्णवेणीरे संध्या" उड़ीसा के इतिहास के एक और महत्वपूर्ण दौर से संबंधित है, जब सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में, उड़ीसा के राजा प्रतापरुद्रदेव विजयनगर साम्राज्य के शासक कृष्णदेव राय के साथ युद्ध हार जाते हैं। अपने बेटे बीरभद्र द्वारा जेल में आत्महत्या करने के बाद प्रतापरुद्र को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। कृष्णदेव राय, जो प्रतापरुद्र से बड़े हैं, शांति संधि की एक शर्त के रूप में उनकी बेटी जगनमोहिनी से विवाह करते हैं। हताशा और पीड़ा में प्रतापरुद्र आध्यात्मिक जीवन की ओर मुड़ते हैं और श्री चैतन्य के एक उत्साही अनुयायी बन जाते हैं।

अजीबकार अट्टहास

"अजीबकर अट्ठाहासा" तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सेट है जब बौद्ध धर्म पतन की स्थिति में था, अंततः महायान और हीनयान संप्रदायों में इसके विभाजन में परिणत हुआ। उपन्यास तपस्या और आत्म-नियंत्रण के बौद्ध सिद्धांतों पर सवाल उठाता है और सम्राट अशोक के शांति और आध्यात्मिक जीवन के महान उपासक के रूप में पारंपरिक अनुमान पर सवाल उठाता है। यह उपन्यास अशोक को एक रणनीतिकार के रूप में दर्शाता है जिसने अपने विषयों को नम्र और विनम्र रखने के लिए बौद्ध धर्म को स्वीकार किया। यह इतिहास की विडंबना है, उपन्यास बताता है, कि कलिंग युद्ध में लाखों उड़िया लोगों को मारने वाले अशोक को एक महान नायक और एक आदर्श राजा के रूप में पूजा जाता है।